

16, 38. HARIV. 1146. 9297. मृगैः 143, 13 (वासति). VARĀH. BRH. S. 46, 68. 88, 6. 93, 39. कुरीमिव वाशतीम् MBh. 3, 2381. 10437. कृताः स्मेति वाशत्यः 10493. G. 4526. HARIV. 1144. 1146. 4820. VARĀH. BRH. S. 88, 21. 93, 28. 43. MĀRK. P. 2, 44. ववाशिरे च दीप्तायां दिशि गोमायुवायसाः MBh. 6, 639. 4522. RAGH. 11, 61 (ed. St. ववाशिरे, ed. Calc. ववाशिरे). BHATT. 14, 14. 76. वाशित्वा VARĀH. BRH. S. 93, 26. — Vgl. राष् und 1. राम्.

— caus. blöken —, krächzen machen RV. 9, 21, 7. कृतो यद्यो गुणं विश्वावीवशन्मतिम् 32, 3. धेनुर्वाशो श्वीवशत् 34, 6. गाः 107, 26. क्राणा सिन्धूनां कलशो श्वीवशत् dröhnen machen 86, 19. तममेव मनेव चामवाशयः hast dröhnen d. h. donnern gemacht 1, 31, 4. med. sich laut hören lassen: मावा यत्र मधुपुडुच्यते वृहद्वीवशत् मतिभिर्मनीषिणः 10, 64, 15.

— intens. laut heulen, — krächzen: पक्षापक्षेति सुभंशं वावाश्यते वयोसि च MBh. 6, 111. वावाश्यमान 12, 389 nach der Lesart der ed. Bomb. st. रावास्यमान der ed. Calc.

— अनु ein Gebrüll u. s. w. erwiedern: वामे वाशित्वा दन्तिपाथे अनुवाशते यातुः VARĀH. BRH. S. 93, 26. हस्त्यश्वाद्यो अनुवाशते 33, 107. mit acc.; pass.: ते प्राण्यसहैरनुवाश्यमानाः 91, 2. शकुनो दीप्ति वामस्थे नानुवाशितः 86, 70.

— प्रत्यनु dass.: द्वाभ्यामपि प्रत्यनुवाशितास्ते मृगाः VARĀH. BRH. S. 91, 2.

— अभि blökend u. s. w. begrüßen, anbrüllen u. s. w.: अभि त्वा नक्तीरुपेतौ ववाशिरे ऽप्ये वृत्से न स्वसेरेषु धेनुवः RV. 2, 2, 2. कृतायतेरे नि वीवश्च इष्टम् 9, 94, 2. 90, 2. 10, 123, 3. गृत्समदं कपिञ्जलो ऽभिववाशि Nīr. 9, 4. अभिववाशतः MBh. 6, 53. 13, 1073. VARĀH. BRH. S. 93, 39. — Vgl. वस्ताभिववाशिन्.

— उद् wehklagend anrufen: उद्वाश्यमानः पितरम् BHATT. 3, 32.

— नि s. निवाश.

— प्र ein Gekrächz erheben: ककैः प्रवाशद्भिः VARĀH. BRH. S. 93, 8.

— प्रति Jmd (acc.) zublöken, zukrächzen: प्रति गावो उपसें वावशत् RV. 7, 73, 7. पदयच्छकुनश्च गर्दभाश्च प्रतिवाश्यते PAÑĀV. Br. 21, 3, 5. 6. LĀTJ. 9, 8, 16. प्रतिवाश्य VARĀH. BRH. S. 93, 29. fg. — Vgl. प्रतिवाश.

— सम् zusammen blöken u. s. w.: समुस्त्रियाभिर्वावशत् नरः RV. 1, 62, 3. इहेकं ज्ञाता समवावशीताम् 181, 4. स सिन्धुभिः कलशैर्वावशानः समुस्त्रियाभिः 9, 96, 14. — caus. zusammen blöken lassen: धेनुः LĀTJ. 3, 6, 1.

1. वाश (von 1. वश) adj. etwa botmässig, gehorsam (= कात oder शब्दायमान SĪJ.) RV. 8, 19, 31.

2. वाश adj. entweder eben so oder zu 2. वश, in einer Formel VS. 10, 4. TS. 2, 4, 2, 2. 9, 3. वाशी 3, 3, 3, 1. — TBr. 1, 7, 5, 4.

3. वाश 1) m. patron. von वश ÇĀṆKH. Ça. 6, 11, 22. — 2) n. N. eines Sāman Ind. St. 3, 236, a. LĀTJ. 1, 6, 45.

1. वाशक (von वाष्) adj. krächzend: नानावाशककङ्कपतिरुचिरं Mṛgāḥ. 144, 11.

2. वाशक 1) m. eine best. Pflanze, = वासक COLEBR. und LOIS. zu AK. 2, 4, 3, 22. — 2) f. वाशिका dass. diess. zu AK. 2, 4, 3, 21. VARĀH. BRH. S. 33, 22, v. l. (nach KERN).

वाशन (von वाष्) 1) adj. krächzend, zwitschernd u. s. w.: भृङ्गालीको-किलकुब्धिर्वाशनेः BHATT. 6, 73. — 2) m. proparox. संज्ञायाम् gaṇa न-न्यादि zu P. 3, 1, 134. — 3) n. das Blöken Comm. zu TBr. III, 318, 8.

16. — Vgl. घोर°.

वाशव m. = वासव DVIRŪPAK. in Verz. d. Oxf. H. 194, b, No. 449.

वाशा f. eine best. Pflanze, = वासक ÇABDAR. im ÇKDr. KAUC. 8. 39. — Vgl. वासा.

वाशि UNĀDIS. 4, 124. m. = अग्नि UḡĖVAL.

1. वाशित (von वाष्) n. Geheul, Gekrächz u. s. w. AK. 1, 1, 4. H. 1407. गोमायु° R. 3, 64, 10. शकुनेः MBh. 9, 1797 (वासित ed. Calc.). VARĀH. BRH. S. 88, 26. 29. 36. गृध्रवायस° KATHĀS. 18, 147. 121, 169. मयूर-वासित Comm. zu NĀJAS. 2, 1, 36.

2. वाशित = वासित (von वास्य) SvĀmin zu AK. nach ÇKDr.

वाशितौ (von वष् oder वाष्) f. 1) eine rindernde Kuh: धूमिकन्दं वृषभो वाशितामिव (वासिताम् die Hdschr.) AV. 5, 20, 2. यथेष्टभायं वाशिता न्या-विच्छायति TBr. 1, 1, 9. 9. AIT. Br. 6, 18. 21. fg. KĀTH. 13, 4. MBh. 1, 4114. 4, 512 (wo mit der ed. Bomb. वर्षभम् st. नर्षभम् zu lesen ist). 7, 5483. R. 7, 32, 52. Bhāg. P. 10, 46, 9. auch von andern weiblichen Thieren gebraucht, die nach dem Männchen verlangen; insbes. von der Elephantenkuh (Elephantenkuh überh. AK. 3, 4, 4, 78. TRIK. 2, 8, 35. H. c. 176. an. 3, 295. fg. MED. t. 132. HĀR. 52) MBh. 1, 4109. वृक्षौ वासिताहेतोः समदाविव कुञ्जौ 5344. 7092. 4, 751. 7, 314. 7102. 11, 642. R. 5, 23, 16. 7, 23, 24. RAGH. 19, 11. Bhāg. P. 8, 12, 32. von einer Löwin: वासितासंगमे यतौ सिंहविव मकावने MBh. 6, 5395. von Gazellen: वासिताभिः स्व-द्वाभिर्मोभिः परिवारितम् (मृगम्) MĀRK. P. 63, 21. Weib, Gattin überh. AK. H. an. MED. HALĀJ. 2, 326. कृत्वा साध्वीं च नारीं च व्यसनिवाञ्च वा-सिताम्। भर्तव्यत्वेन भार्या च MBh. 12, 9532. यो भर्ता वासितातुष्टे भर्तुस्तु-ष्टा च वासिता 13, 5854. Im MBh. R. RAGH. Bhāg. P. MĀRK. P. und bei den Lexicographen (nach ÇKDr. soll AK. वाशिता lesen, aber bei वा-सिता wird dasselbe gesagt) stets वासिता geschrieben.

वाशिन् (von वाष्) adj. heulend, krächzend u. s. w.: मण्डलैः काकगु-धाणामाकोषो रूतवासिभिः (lies रूतवासिभिः) KĀM. NĪTIS. 16, 26. — Vgl. काक°, घोर°.

वाशिष्ठ s. वासिष्ठ.

वाशी f. 1) ein spitzen Messer, bes. zum Schneiden: वाशीमेको विभ-र्ति हस्तं श्रायसोम् RV. 8, 29, 3. स शिशितु वाशीभिर्गामिर्मृताय तन्नय 10, 33, 10. अस्मन्मयी 101, 10. der Marut 1, 37, 2. 88, 3. 5, 33, 4. यज्ञो शिष्टः प्रार्थयित्वा हस्तेन वाश्यां (वास्यो die Hdschr.) AV. 10, 6, 3. RV. 8, 12, 12. यदेन घृतेभिर्वाहुते वाशीमग्निर्भरत उच्चावे च wenn Agni sein Messer d. h. die spitze Flamme auf und ab bewegt 19, 23. वासि UNĀDIS. 4, 124. P. 3, 3, 308, Vārt. 7. Schol. = हेदनवस्तु UḡĖVAL. = काष्ठभेदि-नी ders. zu 117. वासी Axt TRIK. 2, 10, 3. H. 918. वास्यैकं (वास्यैकं ed. Calc.) तन्नतो वक्रम् MBh. 1, 4605. 5, 5250 (वाशी ed. Bomb., = काष्ठप्र-च्छेदं शस्त्रम् NĪLAK.). — 2) angeblich Stimme, Ton NĀIGH. 1, 41. NĪR. 4, 16. 19. — Vgl. किरण°.

वाशीमत् (von वाशी) adj. ein Messer tragend NĪR. 4, 16. die Marut RV. 5, 57, 2. Agni 10, 20, 6.

वाशुरा f. UNĀDIS. 1, 39. Nacht UḡĖVAL.

वाष् (von वाष्) UNĀDIS. 2, 13. adj. (f. वा) blökend, brüllend; dröhnend; klingend, pfeifend: das Rind RV. 1, 32, 2. 38, 3. 93, 6. 2, 34, 15. 8, 43, 17. 9, 13, 7. 34, 6. 77, 1. 10, 119, 4. वाश्वेव वृत्से सुमना उहोना न्येतु 149, 4.